प्रसार शिक्षा निदेशालय

चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर

जनवरी 2018 महीने के प्रथम पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्य

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने जनवरी, 2018 माह के प्रथम पखवाड़े में किये जाने वाले मौसम पूर्वानुमान सम्बन्धित कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है, जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।

गेहूँ

- जहां पर गेहूँ की बिजाई हो चुकी हो तथा खरपतवार में 2-3 पत्ते आ गए हों तो खरपतवार नियन्त्रण के लिए रसायन जिसमें आईसोफोट्रान 75 डब्ल्यू. पी. होता है की 70 ग्राम मात्रा व 2,4-डी (80 डब्ल्यू. पी.) की 50ग्राम या क्लोडिनॉप की 24 ग्राम (10 डब्ल्यू.पी.) या 16 ग्राम (15 डब्ल्यू. पी.) व 2,4 डी, की 50 ग्राम मात्रा 30 लीटर पानी में घोलकर प्रति कनाल छिड़काव करें। 2,4-डी का छिड़काव क्लोडिनॉप के छिड़काव के 2-3 दिन के बाद करें । छिड़काव के लिए फ्लैट फैन नोज़ल का इस्तेमाल करें।यदि गेहूँ के साथ चौड़ी पत्ती वाली फसल की खेती की गयी हो तो 2,4-डी का प्रयोग न करें।
- हिमाचल प्रदेश के जिन क्षेत्रों में गेहूं की रतुआ संवेदनशील किस्मों में पीला रतुआ नामक बीमारी के प्रकोप के आसार दिखने लगे हैं। इस रोग में गेहूं के पत्तों पर पीले रंग के छोटे-2 दाने सीधी धारिओं में प्रकट होते है व दूसरी आरे पत्तों में धारीदार पीलापन दिखाई देता है। बीमारी के जल्दी प्रकट हाने पर पौधे बौने रह जाते है व पैदावार पर बहुत असर पड़ता है। यदि मौसम ठण्डा व नम रहे व थोड़ी वर्षा हो जाए तो यह रोग महामारी का रूप धारण कर सकता है।गेहूं के दाने या तो बनते ही नहीं है या छोटे व झुर्रीदार हो जाते है। फिर भी जहां पर किसानों ने पी.बी.डब्ल्यू-343, पी.बी.डब्ल्यू-502, पी. बी.डब्ल्यू-550, एच.पी.डब्ल्यू-184, एच.पी.डब्ल्यू-42, एच.एस.-240, एच.एस.-295, एच.एस.-420, यू.पी.-2338 या डब्ल्यू.एच. -711 किस्में बीजी है,ऐसे क्षेत्रों में सभी को इस बीमारी से सतर्क रहने की आवश्यकता है। किसान भाईयों को यह सलाह दी जाती है कि ऊपर बताए गए लक्षणों को देखते ही गेहूं की फसल में टिलट(प्रापिकोनाजोल) 25 ई.सी. या फालीक्योर (टैबुकोनाजोल) 25 ईसी. या बेलाटान 25 डब्ल्यू.पी. का 0.1 प्रतिशत घोल यानि 30 मि.ली. रसायन 30 लीटर पानी में घोलकर प्रति कनाल की दर से छिड़काव करें व 15 दिन के अन्तराल पर इसे फिर से दोहराएं।

सब्ज़ी उत्पादन

- प्रदेश के निचले व मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में प्याज की पौध की रोपाई 15-20 सैं.मी. पंक्तियों में तथा 5-7 सैं.मी. पौधे से पौधा की दूरी पर करें। रोपाई के समय 200-250 क्विंटल गोबर की खाद के अतिरिक्त 235 कि. ग्रा. (12:32:16) मिश्रण खाद 110 कि.ग्रा. यूरिया तथा 35 कि. ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हैक्टेयर खेतों में डालें। रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करें।
- प्रदेश के मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में आलू की बिजाई के लिए सुधरी किस्मों जैसे कुफरी ज्योति, कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी गिरीराज व कुफरी हिमालिनी इत्यादि का चयन करें। बिजाई के लिए स्वस्थ, रोग रहित, साबुत या कटे हुए कन्द (वज़न लगभग 30 ग्राम) जिनमें कम से कम 2-3 आंखें हों, का प्रयोग करें। बिजाई से पहले कन्दों को डाईथेन एम 45 (25 ग्राम)तथा सिंगल सुपरफास्फेट (150 ग्रा.) प्रति 10 लीटर पानी के घोल में 30 मिनट तक भिगोने के उपरान्त छाया में सुखा कर बीजाई करें। दवाई का एक बार बनाया हुआ घोल 10 बार तक प्रयोग में लाया जा सकता है। आलू की बिजाई अच्छी तरह से तैयार खेत में 15-20 सैं.मी. आलू से आलू तथा 45-60 सैं.मी. पंक्तियों से पंक्तियों की दूरी पर मेढ़े बनाकर की जा सकती है। बिजाई के समय 200-250 क्विं. गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 250 कि.ग्रा. इफको (12:32:16) मिश्रण खाद 30 कि.ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश तथा 60 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर खेत में डालें। आलू में खरपतवार नियन्त्रण के लिए एट्राटॉफ 2.0 किलो ग्राम या एरिलान/ग्रेमीलान 1.5 कि. ग्रा. या गोल 0.2 ली. प्रति 750 लीटर पानी प्रति हैक्टेयर की दर से घोल बनाकर बीज अंकुरण से पहले खेत में छिड़काव करें।

---

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

- इसके अतिरिक्त खेतों में लगी हुई सभी प्रकार की सब्ज़ियों जैसे फूलगोभी, बन्दगोभी, गाँठगोभी, ब्रॉकली, चाईनीज बन्दगोभी, पालक, मेथी, मटर व लहसुन इत्यादि में निराई-गुड़ाई करें तथा नत्रजन (40-50 कि.ग्राम यूरिया प्रति हैक्टेयर) खेतों में डालें। आवश्यकतानुसार 8-10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।

फसल संरक्षण

- सरसों वर्गीय तिलहनी फसलों में व गोभी वर्गीय सब्ज़ियों में तेले (एफिड) का प्रकोप होने पर मैलाथियान 50 ई.सी. 1 मि.ली. प्रति ली. पानी की दर से छिड़काव करें। अधिक प्रकोप होने पर 15 दिन के अन्तराल पर फिर से छिड़काव करें। ध्यान रखें कि छिड़काव के बाद कम से कम एक सप्ताह तक सब्ज़ियाँ न तोड़ें।
- जिन क्षेत्रों में भूमि में पाये जाने वाले कीटों जैसे कि सफेद सुंडी, कटुआ कीट व लाल चींटी इत्यादि का प्रकोप होता है वहां पर आलू की बिजाई से पहले क्लोरपाइरिफॉस 20 ई.सी. (2 ली.) को रेत (25 कि.ग्रा.) में मिलाकर प्रति हैक्टेयर क्षेत्र की दर से खेत में मिलाएं।

नोट : छिड़काव करते समय स्टिकर डाल लें।

पशुधन

- पशुओं को बरसीम भूसे के साथ 10:1 के अनुपात में कुतरने के बाद खिलायें। यदि सूखा चारा ही खिला रहे हों तो प्रत्येक पशु को प्रतिदिन 40 ग्राम खनिज मिश्रण (आई.एस.आई. मार्क) अवश्य खिलायें। पशुओं को ठंड से बचाव के लिए उचित प्रबन्ध करें। दाना मिश्रण में ऊर्जा की मात्रा 2-3 प्रतिशत बढ़ा दें। स्तनों पर दूध निकालने के बाद मक्खन या मलाई में जिंक ओकसाईड (ZnO) मिला कर लगायें, दूध न लगायें। यदि पशुओं को ठंड लग जाए तो समीप के पशु-चिकित्सक की सहायता लें।
- मुर्गीयों के कमरों में उचित तापक्रम सुनिश्चित करें और ठंड से बचाव करें। मुर्गीघरों में प्रतिदिन 15-16 घंटे रोशनी का प्रबन्ध करें। दाना मिश्रण में भी ऊर्जा की मात्रा बढ़ा दें। चूजों के पालन पर विशेष ध्यान दें तथा पुरानी मुर्गीयों से अलग रखें। मच्छलियों के तालाब में पानी का स्तर 4-4.5 मीटर अवश्य रखें व खुराक कम दें।
- खरगोशों में प्रजनन न करवायें, ऊन न उतारें व ऊर्जा से भरपूर दाना मिश्रण खिलाऐं। ठंड से बचाने का उचित प्रबन्ध करें।

किसान भाईयों एव पशु पालकों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ठ जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें । अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र (एटिक) (01894-230395) से भी सम्पर्क कर सकते हैं ।

21/12/17

निर्देशक
प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशलय, चौ. स. कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर द्वारा किसानों के हित में जारी ।

प्रतिलिपि :

1. सयुंक्त निदेशक (सूचना व जनसम्पर्क), चौ.स.कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
2. मुख्य सम्पादक, गिरीराज प्रैस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला (हि.प्र.)
3. प्रभारी, यू.एन.एस., चौ.स.कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय को बेवसाइट में अपलोड हेतू प्रेषित।

Endst No. QSD 3-57/DEE/Tech/CSKHPKV/- 9088-90 Dated : 21/12/17

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

SNN